(समाजशास्त्र) BA Part II (H)

Paper III Social Anthropology

7.5.20 जन-जातीय जादू (Magic)

From – ARUN KUMAR
Reader
Deptt of Sociology
Sherghati college –

जादू – टोना आदिकालीन मानव समाज के धर्म का या धार्मिक विश्वासों का एक दूसरा अभिन्न पक्ष है और धर्म के साथ इतना अधिक घुला मिला हुआ है कि दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। उदाहरण, महामारी रोकने, वर्षा लाने रोगी की चिकित्सा करने यहां तक कि प्रसव के समय माँ के गर्भ से बच्चे को जल्दी जन्म देने के लिए धार्मिक क्रियाओं के साथ साथ अनेक प्रकार के जादू टोने की भी सहायता ली जाती है। परन्तु इस समय मे जादू के वास्तविक अर्थ व प्रकृति समझना होगा।

जादू क्या है? – मनुष्य ने अतिमानवीय जगत पर अलौकिक शक्ति को नियन्त्रण करने हेतु दो उपायों को अपनाया – प्रथम तरीका उस शक्ति की विनती या आराधना के द्वारा उसे प्रसन्न करना और फिर उस प्रसन्नता से लाभ उठाना या उस शक्ति के द्वारा की जाने वाली हानियों से बचना है। इसी से धर्म का विकास हुआ और दूसरा तरीका उस शक्ति को दबाकर अपने अधिकार करके उस शक्ति को अपने उद्देश्य पूर्ति के हेतु प्रयोग करना है यही जादू है।

डॉ दुबे के अनुसार – जादू उस शक्ति विशेष का नाम है जिससे अतिमानवीय जगत पर नियन्त्रण प्राप्त किया जा सके और उसकी क्रियाओं को अपनी इच्छानुसार भले या बुरे, शुभ अशुभ उपयोग मे लाया जा सके।"

डॉ० दुबे ने जादू की तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है प्रथम – जादू का सम्बन्ध अतिमानवीय जगत से होता है दूसरा यह कि जादू एक शक्ति है जादूगर इस शक्ति अपने अधिकार मे अतिमानवीय जगत पर नियन्त्रण पाने के उद्देश्य से रखना चाहता है। तीसरी – इस शक्ति का प्रयोग भले या बुरे शुभ या अशुभ काम के लिए किया जा सकता है। दूसरे शब्दों मे जादूगर अपनी उस शक्ति की सहायता से दूसरे को हानि या लाभ पहुंचा सकता है।

श्री फ्रेजर के विचार उक्त विचार से कुछ भिन्न है। इनका कथन है कि जादू इस आधार पर एक विज्ञान है जो एक 'अटल नियम' के अनुसार यह प्रकृति पर दबाव डालता है, जादू प्रकृति पर नियन्त्रण पाने का एक साधन है।

श्री मैलिनोवस्की ने जादू के सम्बन्ध मे लिखते है कि जादू विशुद्ध व्यवहारिक क्रियाओ का योग है जिन्हे उद्देश्यो की पूर्ति के साधन के रूप मे प्रयोग किया जाता है। आदिकालिन समाज मे और भी अधिक है क्योकि आदिवासी लोगो के जीवन मे अनेक - ऐसी परिस्थितियाँ और समस्याऐ उठ खड़ी होती है जिसका हल वे अपनी सिमित बुद्धि और कौशल के आधार पर नही कर पाते है उसकी इस कमी को धर्म और जादू पूरा करता है। उनके जीवन मे अनेक खतरे होते है और ऐसी अनेक दुर्घटनाऐ होती है जिसका अन्दाजा पहले से नही लगाया जा सकता है ऐसी परिस्थितियो मे जादू लोगो को बहुत बड़ा सहारा है। इसके अतिरिक्त जादू - चमत्कारो मे विश्वास दिलाकर अनेक कठिन परिस्थितियो का सामना करने का साहस लोगो को प्रदान करता है। जादू का चमत्कार इसके शत्रु का विनाश करने या उसे हानि पहुँचाने मे भी मदद करता है। जादू वह शक्ति है जो कुछ व्यावहारिक हितो की पूर्ति के साधन के रूप मे प्रयोग मे लाई जाती है।

डॉ. पुनेके अनुसार जादुई क्रियाओ के तत्व :- (1) कतिपय शब्द - ये शब्द साधारण से कुछ भिन्न और सामान्यत: गुप्त रखे जाते है इनका उपयोग केवल वेही लोग जानते है जो जादुई क्रिया मे निपुण होते है। ये निपुण व्यक्ति जादू के इन शब्दो या मन्त्रो को अपने शिष्यो को ही सिखाते है (2) शब्दोच्चारण के साथ कतिपय विशिष्ट क्रियाएँ — मन्त्रो के प्रतिफलित होने के लिए बहुधा उनके उच्चारण के साथ कतिपय क्रियाओ का करना आवश्यक होता है।

(3) जादू करने वाले व्यक्ति की विशेष स्थिति, जिन दिनो जादू की क्रियाएँ की जाती है उस दिनो प्रतिदिन जैसा जीवन से कुछ भिन्न प्रकार का जीवन बिताना आवश्यक समझा जाता है इस काल मे जादूगर को कुछ विशिष्ट चीजो के खाने पीने का कुछ विशिष्ट व्यवहारो की मनाही होती है।

श्री मैलिनोवस्की के अनुसार जादुई क्रियाओ के चार तत्व है।

(1) मन्त्र — (Spell) मन्त्र प्रत्येक जादुई क्रिया का सर्वप्रथम और आधारभूत तत्व है इसके बिना कोई भी जादुई क्रिया सम्पन्न हो ही नही सकती। यह मन्त्र की ही शक्ति है जो प्रभाव डालकर अपना अभीष्ट सिद्ध कर लेती है। प्रत्येक मत्र मे तीन विशेषताएँ होते है।

<1> प्राकृतिक आवाजो की नकल आवश्यक है। <2> आदिम मन्त्रो मे इस प्रकार के शब्दो का प्रयोग किया जाता है कि वे किन्ही वर्तमान परिस्थितियो को बतलाते है और इच्छित उद्देश्य को पूरा करने का आदेश देते है। (3) प्रत्येक सम्मोहन मन्त्र मे उन देवजी के नाम का भी उल्लेख होता है जिनसे जादू प्राप्त हुआ माना जाता है।

(ब) भौतिक पदार्थ - प्रत्येक प्रकार की जादुई क्रिया मे कुछ निश्चित भौतिक पदार्थो को काम मे लाया जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि इन भौतिक चीजो के प्रयोग मे न लाए बगैर इच्छित उद्देश्यो की पूर्ति सम्भव नही है। इस कारण से भौतिक चीजे भी जादुई क्रिया का एक आवश्यक अंग है काले जादू मे कब्र या चाकू या जहरीली चीजो का प्रयोग होता है और प्रेम जादू मे इत्र फूल या अन्य इस प्रकार की वस्तुए काम मे लाई जाती है।

(स) कृत्यो की नियमबद्धता - जादुई क्रिया मनमाने ढग से नही की जाती। एक इच्छित उद्देश्य की पूर्ति के लिए जादुई क्रियाएं की एक निश्चित विधि या तरीका होता है। किस क्रम मे किस तरह की कौन सी जादुई क्रियाएं की जाएगी इसका उचित तथा क्रमबद्ध ज्ञान जादूगर को होना चाहिए। यदि जादुई क्रिया अपने उद्देश्य की पूर्ति मे सफल न हुई तो यह सोच लिया जाता है कि जादूगर अज्ञानी है।

(द) संवेगो की अभिव्यक्ति — प्रत्येक प्रकार के जादू मे उद्देश्यो के अनुसार अलग-2 संवेगो की अभिव्यक्ति की जाती है। यह विश्वास किया जाता है कि इन संवेगो को जाहिर करने पर मन्त्रो को बल मिलता है और उसका अभिलषित प्रभाव अभीष्ट और सिद्धि को पास लाता है, इसलिए जादूगर अपने उद्देश्य के अनुसार संवेगो को अवश्य प्रकट करता है उदाहरण- काले जादू मे जादूगर का उद्देश्य दुश्मन को मारना होता है इसलिए जादू करने के समय जादूगर के चेहरे से क्रूरता का भाव टपकता है और वह अपने क्रोध को झलकाते हुए मन्त्रो का उच्चारण करता है।

डॉ॰ हुबेने - जादुई क्रिया के उद्देश्य के आधार पर जादू को तीन भागो मे बांटा है।

<1> सरक्षक जादू - इसके अन्तर्गत सम्पत्ति रक्षा के लिए जादू दिए हुए ऋण को पुनः प्राप्त करने के लिए जादू दुर्भाग्य से बचाव के लिए जादू रोग उपचार के लिए जादू यात्रा के सुरक्षा के लिए जादू विनाशक, जादू के प्रभाव

को रोकने के अवरोधक जादू आदि सम्मिलित है।

(2) संवर्द्धक जादू – इसके अन्तर्गत आखेट का जादू, उर्वरता का जादू, वर्षा होने का जादू, मछली पकड़ने का जादू, नौका चलाने का जादू वाणिज्य लाभ का जादू आते हैं।

(3) विनाशक जादू – इसके अन्तर्गत तुफान लाने के लिए जादू सम्पत्ति नष्ट करने के लिए जादू बीमार करने के लिए जादू मृत्यु बुलाने के लिए जादू आदि आते हैं।

श्री फ्रेजर ने जादू की परिभाषा – जादू एक विज्ञान की अवैध बहन) कहा जाता है। जादू आदिमानव का विज्ञान है (1) जादू और विज्ञान दोनो ही यह स्वीकार करते हैं कि घटनाऐं कुछ प्राकृतिक नियमो के कारण ही घटित होती है वैज्ञानिक और जादूगर दोनो ही यह मानते है कि प्राकृतिक घटनाओ के कार्य कारण सम्बन्धो को समझकर कारणो को उत्पन्न पर कार्य को भी पैदा किया जा सकता है। जादू और विज्ञान मे एक और समानता यह है कि दोनो मे कुछ न कुछ सीमा तक भविष्यवाणी करने की क्षमता होती है)

From – Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram-